सरसों की वैज्ञानिक विधि से खेती

कृषि कुंभ (नवंबर 2023),
खण्ड 03 अंक 06, पृष्ठ संख्या 12–14

कैसे करें किसान भाई सरसों की वैज्ञानिक विधि से खेती

मो0 मुईद[1] ज्योति यादव[2] महताब अहमद[3] एवं लवी खोलिया[4]

[1,2,4]शोध छात्र, सस्य विज्ञान
[3]कृषि विभाग,सस्य विज्ञान
इंटीग्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस एंड टेक्नोलॉजी,
इंटीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊ, भारत।

Email Id: mmued@iul.ac.in

भारतीय अर्थव्यवस्था में सरसों वर्ग की फसलों का महत्वपूर्ण स्थान है, तथा अपने आहार का मुख्य अंग है। सरसों का उपयोग भिन्न–2 रूपों में किया जाता है। सरसों के हरे पौधे से लेकर सूखे तने और शाखाओं एंव बीज आदि सभी का मानव उपयोग में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

सरसो के हरे पौधे का उपयोग जानवरो के हरे चारे के लिये उपयोग किया जाता है। मानव के सब्जी के रूप में भी नई कोमल शाखाओं का उपयोग किया जाता है। सरसों के तेल के महत्वपूर्ण उपयोग इस प्रकार है कि– जलाने के लिये, मानव शरीर के मलीश के लिये, चमडें एंव लकडी के सामान पर लगाने के लिये तथा साबुन और रबर निर्माण में, सरसों के बीजो को टेबिल मस्टर्ड, मसाले तथा अचार और सब्जियों के लिये भी प्रयोग किया जाता है।

जलवायु:

सरसों भारत की प्रमुख तिलहन फसल में से एक है, रबी की फसल होने के कारण मध्य सितंबर से मध्य अक्टूबर तक सरसों की बुवाई कर देनी चाहिए। सरसों की फसल का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए 15 से 25 डिगी तापमान की आवश्यकता होती है।

मिट्टी:

तिलहनी फसलों के लिए हल्की से भारी जमीनें अच्छी होती हैं। राया हर तरह की जमीन में उगाया जा सकता है पर तोरिये के लिए भारी जमीनें चाहिए। तारामीरा के लिए आमतौर पर रेतली से मैरा रेतली जमीनें अच्छी होती हैं।

भारतीय सरसों की किस्में

आर एच 0749: यह किस्म हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राज्यस्थान में उगाने के लिए बढ़िया मानी जाती है। यह एक अधिक पैदावार वाली किस्म है जिसकी एक फली में बाकी किस्मों से ज्यादा दाने होते हैं। यह किस्म 146–148 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इस किस्म के बीज मोटे और इनमें तेल की मात्रा 40 प्रतिशत होती है। इसकी औसतन पैदावार 10.5–11 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

आर एच 0406: यह बारानी क्षेत्रों में लगाने योग्य किस्म है। यह 142–145 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी औसतन पैदावार 8.8–9.2 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

टी 59 : यह किस्म हर तरह की जलवायु में उगाने योग्य है। यह 145–150 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसमें 39 प्रतिशत

तेल की मात्रा होती है। इसकी औसतन पैदावार 6–8 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

प्राइवेट कंपनियों की किस्में

दूसरे राज्यों की किस्में

पुसा अगरानी: यह किस्म सिंचाई वाले, जल्दी और देरी से बीजने वाले क्षेत्रों में बोयी जाती है। यह लगभग 110 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी औसतन पैदावार 7.2 क्विंटल प्रति एकड़ होती है और तेल की मात्रा 40 प्रतिशत होती है।

पुसा सरसों 21: –यह किस्म सिंचित क्षेत्रों में सही समय पर उगाने योग्य है। इसकी औसतन पैदावार 7.2–8.4 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

पुसा सरसों 24:यह किस्म सिंचित क्षेत्रों में सही समय पर उगाने योग्य है। इसकी औसतन पैदावार 8–10 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

पुसा सरसों 26: यह लगभग 107 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इस किस्म की पैदावार दूसरी किस्मों के मुकाबले ज्यादा होती है। इसमें तेल की मात्रा 41.5 प्रतिशत होती है।

खेत की तैयारी

सीड बैड पर बोयी फसल अच्छी अंकुरित होती है। जमीन को देसी हल से दो या तीन बार जोताई करें और प्रत्येक जोताई के बाद सुहागा फेरें। बीजों के एकसार अंकुरित होने के लिए बैड नर्म, गीले और समतल होने चाहिए।

बुवाई का समय

सरसों की बिजाई का सही समय सितंबर से अक्तूबर है। तोरिया फसल की लिए बिजाई सितंबर के पहले पखवाड़े से मध्य अक्तूबर तक कर लेनी चाहिए। अफ्रीकी सरसों और तारामीरा की फसल अक्तूबर के आखिर तक बोयी जा सकती है। राया फसल की बिजाई मध्य अक्तूबर से नवंबर के आखिर तक की जाती है। जब तारामीरा को मुख्य फसल के बीच उगाया जाता है तो इसकी बिजाई मुख्य फसल पर निर्भर करती है।

पौध से पौध एंव पक्ति से पक्ति की दूरी:–

तारामीरा–सरसों की बिजाई के लिए पंक्ति से पंक्ति का फासला 30 सैं.मी. और पौधे से पौधे का फासला 10 से 15 सैं.मी. रखें। गोभी सरसों की बिजाई के लिए पंक्तियों का फासला 45 सैं.मी. और पौधे से पौधे का फासला 10 सैं. मी. रखें।

बीज की गहराई:–

बीज 4–5 सैं.मी. गहरे बीजने चाहिए।

बिजाई का ढंग

बिजाई के लिए बिजाई वाली मशीन का ही प्रयोग करें।

बीज की मात्रा

जब तारामीरा या सरसों अलग अलग उगाए जाते हैं तो बीज की मात्रा 1.5 किलोग्राम प्रति एकड़ की जरूरत होती है। बिजाई के 3 सप्ताह बाद कमजोर पौधों को नष्ट कर दें और सेहतमंद पौधों को खेत में रहने दें।

बीज का उपचार

बीज को मिट्टी के अंदरूनी कीटों और बीमारियों से बचाने के लिए बीजों को 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचार करें।

खाद व उर्वरक का प्रयोग:–

जिन खेतों में सिंचाई के उपयुक्त साधन उपलब्ध हो वहां के लिए 6 से 12 टन सड़े हुए गोबर की खाद, 160 से 170 किलोग्राम यूरिया, 250 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट ,50 किलोग्राम म्यूरेट व पोटाश एवम 200

किलोग्राम जिप्सम बुवाई से पूर्व खेत में मिलाना उपयुक्त होता है। यूरिया की आधी मात्रा बुवाई के समय एंव बची हुई आधी मात्रा पहली सिंचाई के बाद खेत में मिला दें। जिन खेतों में सिंचाई के उपयुक्त साधन उपलब्ध ना हो वहां के लिए वर्षा से पुर्व 4 से 5 टन सड़ी हुई गोबर की खाद, 85 से 90 किलोग्राम यूरिया, 125 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 33 किलोग्राम म्यूरेट व पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई करते समय खेत में डाल दें।

खरपतवार नियंत्रणः–

नदीनों की रोकथाम के लिए 2 सप्ताह के फासले पर, जब नदीन कम हो 2–3 गोडाई करें। तोरिये की फसल में नदीनों की रोकथाम के लिए फसल उगाने से पहले ट्राइफलूरालिन 400 मि.ली. को 200 लीटर पानी में डालकर प्रति एकड़ पर छिड़काव करें। राया की फसल के लिए बिजाई से 2 दिन पहले या बिजाई के 25–30 दिन बाद आइसोप्रोटिउरॉन 75 डब्लयु पी 300 ग्राम को 200 लीटर पानी में डालकर प्रति एकड़ पर बिजाई के बाद स्प्रे करें।

सिंचाई

फसल की बिजाई सिंचाई के बाद करें। अच्छी फसल लेने के लिए बिजाई के बाद तीन हफ्तों के फासले पर तीन सिंचाइयों की जरूरत होती है। जमीन में नमी को बचाने के लिए जैविक खादों का अधिक प्रयोग करें।

फसल की कटाई और भंडारण

सरसों की फसल में जब 75% फलियां सुनहरे रंग की हो जाए, तब फसल को मशीन से या हाथ से काटकर, सुखाकर या मड़ाई करके बीज को अलग कर लेना चाहिए, सरसों के बीज जब अच्छी तरह से सूख जाएं तभी उनका भंडारण करना चाहिये।

उत्पादन

जिन क्षेत्रों में सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है वहां इसकी पैदावार 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो सकती है तथा जिन क्षेत्रों में सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था हैं वहां 25 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की उपज प्राप्त हो सकती हैं।

सरसों की खेती : सरसों का बाजार भाव व कमाईः–

केंद्र सरकार ने इस साल सरसों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में 150 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि कर 5200 रुपये प्रति क्विंटल का भाव तय किया है। पिछले वर्ष सरसों का न्यूनतम समर्थन मूल्य 5050 रुपये था। सरसों की बढ़ती मांग और उपलब्धता में कमी के कारण इस बार खुले बाजारों में न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी ज्यादा भाव मिल रहे हैं। खुले बाजारों में सरसों 6500 से 9500 रुपये प्रति क्विंटल का भाव मिल रहा है। किसान अपनी सरसों की फसल देश की प्रमुख मंडियों में जहां भाव अधिक हो, वहां अपनी फसल बेच सकते हैं। इसके अलावा सीधे तेल प्रोसेसिंग कंपनियों से संम्पर्क करके सीधे कंपनियों को भी बेचा जा सकता है। वहीं किसान खुले बाजार में व्यापारियों को भी अपनी फसल बेच सकते हैं। बता दें कि इस साल सरसों की फसल ने किसानों को अच्छे दाम दिलाए हैं। किसानों को आगे भी सरसों के अच्छे भाव मिलने की उम्मीद है।